मूलदेव अथवा करकण्डु के रचयिता के जीवन परिचय एवं कृतियों पर प्रकाश डालें।

मूलदेव या करकण्डु के रचयिता आचार्य देवेन्द्र गणि हैं जिनका उपनाम नेमिचन्द्र सूरि भी है। ये हिन्दी बृहद् गद्य की परम्परा के महान पोषक थे। प्राकृत साहित्य में देवेन्द्र गणि एवं नेमिचन्द्र सूरि नाम के कई आचार्य तथा लेखक हुए हैं जिनके अतः प्रायः उनके काल एवं रचनाओं के निर्णय में उलझने उत्पन्न होती रही है प्रस्तुत लेखक के सम्बन्ध में प्रमाणित जानकारी हेतु देवेन्द्र गणि के प्रशिष्य एवं जिनचन्द्र के शिष्य की प्रशस्ति महत्वपूर्ण है आरम्भाण-मणिकोष की टीका-गाथा-9, 10, 11।

उक्त प्रशस्ति पत्र से प्रतीत होता है कि नेमिचन्द्र सूरि ने उत्तराध्ययन के सुखबोध टीका, महावीर-चरियं तथा आरम्भाण मणिकोष नामक-चरित लिखी। इस कथन से गोम्मटसार एवं द्रव्य संग्रह के लेखक नेमिचन्द्र एवं अनन्त नाथ चरियं के कर्ता नेमिचन्द्र से प्रस्तुत ग्रन्थ के कर्ता नेमिचन्द्र भिन्न हैं।

काल एवं स्थान निर्णय- नेमिचन्द्र या देवेन्द्र गणि की जन्म तिथि के संबंध में कोई प्रमाणिक सामग्री उपलब्ध नहीं होती, कुछ पट्टावलियां अवश्य ही उपलब्ध है लेकिन उनके देखने से कई प्रकार के मतभेद रह जाते हैं उनसे अपनी रचनाओं में प्राप्त प्रशस्तियों के माध्यम से उनकी रचना का समय सन् 1075 से 1084 ई० तक माना जा सकता है जन्म तिथि के समान ही जन्म स्थान में भी कोई निश्चित उल्लेख नहीं मिलते। उनकी रचनाओं में दण्डीलवाग, अर्णहिल्ल वाहन आदि नगरों के नाम उल्लेख मिलता है कुछ रचनाएँ उस स्थल में रहकर लिखी भी गई थी, जिसे देखते हुए उक्त स्थानों को ही साहित्य साधना का केन्द्र माना जाता है और उसके अनुमानित तौर पर यह कहा जासकता है कि उनका जन्म स्थान उत्तरी गुजरात में ही

होना चाहिए।

रचनाएँ :- (1) आख्यानमणि कोष - आख्यानमणिकोष उत्तराध्ययन सूत्र पर सुखबोध टीका नामक जिसकी रचना का विक्रम संवत 1129 है यह अत्यन्त महत्वपूर्ण रचना है यह प्राकृत कथाओं का कोष है आम्रदेव सूरि ने इस पर एक टीका लिखी है इनमें अधिकार है मूल और टीका दोनों ही प्राकृत पद्य में है टीकाकार ने कहीं-कहीं गद्य का भी प्रयोग किया है कुछ आख्यान अपभ्रंश में है बीच-बीच में संस्कृत के पद्य भी मिलते है

(2) उत्तराध्ययन सूत्र सुखबोध टीका - अर्धमागधी भाषा के साहित्य में उत्तराध्ययन सूत्र कई दृष्टियों से अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है सरल भाषा एवं सरस सुरुचि पूर्ण शैली में विषय का प्रतिपादन होने के कारण यह रचना बड़ी लोकप्रिय है अर्धमागधी साहित्य में यह रचना प्राचीनतम रचनाओं की कोटि में आती है अतः विषय के साथ ही भाषा के ऐतिहासिक क्रम के अध्ययन करने में भी इस रचना से बड़ी सहायता मिलती है

नेमिचन्द्र सूरि या देवेन्द्र गणि ने जनसाधारण के हितार्थ प्रस्तुत रचना पर एक सुखबोध नामक टीका लिखा था जिसका दूसरा नाम लघुवृत्ति है उक्त लेखक ने इसे स्वीकार किया है कि उक्त टीका अपने पूर्ववर्ती शान्तयाचार्य विरचित बृहद्वृत्ति नामक टीका के आधार पर लिखी है अपने सुखबोध टीका में लेखक ने जहाँ उलझनों से भरे स्थलों का सरलीकरण किया है वहीं उसने कुछ अन्य गाथाएँ या दृष्टान्त जोड़ भी दिये है जिससे विषय का प्रकरण सरल बन जाता है

(3) महावीर-चरियं - प्रस्तुत रचना की प्रशस्ति से ही विदित होता है कि इसे विक्रम संवत 1141 में लिखा गया था। इस रचना से यह विदित होता है कि लेखक ने इसे

महाराजा करण के राजान्तर्गत अणहिल्ल पुर नामक नगर के दोहद्दी नामक व्यापारी के भवन में रह कर लिखा ~~था~~ था। इस ~~स्थान के~~ रचना में भगवान महावीर का जीवन चरित्र विस्तृत रूप में 1385 गाथाओं में लिखा गया है, ग्रन्थकार ने सर्वप्रथम भगवान के 27 भवों का जन्म वर्णन किया है और उसके बाद उनके निर्वाण प्राप्त होने तक का वर्णन किया है समालोचकों के अनुसार यह रचना रयणचूड राज चरित्र की भाँति ही है

उक्त रचनाओं के अतिरिक्त इनकी एक आत्म बोध-कुलक नामक भी रचना मानी जाती है इसके 22 पदों में आत्मा को प्रतिबोध किया गया है इसकी रचना शैली बड़ी ही मार्मिक है परन्तु इस रचना के सम्बन्ध में कुछ लोगों को संदेह है कि यह रचना लेखक की ही कृति है फिर भी अधिकांशतः विद्वानों के मन्तव्यों के आधार पर यह सिद्ध होता है कि उक्त रचना उपलेखक की ही कृति होनी चाहिए।